02 December, 2007.

ज्योतिष और फिल्म जगत

बेजोड़ नृत्यागंना

नाम : - माधुरी दीक्षित
जन्म तारिख :- १५ मई, १९६६
जन्म समय :- २० : ०० रात्रि
जन्म स्थान :- रत्नागिरी (महाराष्ट्र)

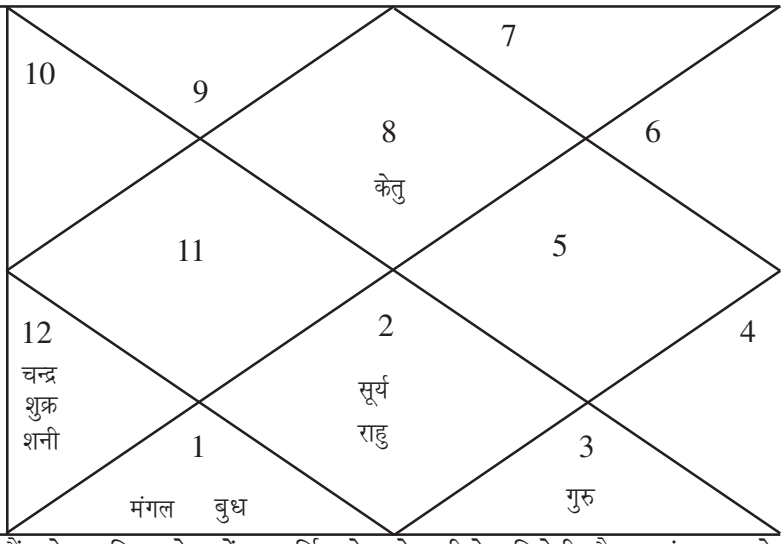

माधुरी दीक्षित एक एसा नाम हैं जो देश विदेश में चर्चित हैं । तेजाब फिल्म से रातोंरात चर्चित हो जाने वाली ये अभिनेत्री और नृत्यांगना अपने नृत्य और अभिनय से सबका मन मोह चुकी हैं । हालाकि माधुरी की पहली फिल्म 'अबोध' थी परन्तु चर्चा में वो तेजाब के बाद आयी हैं । उसके बाद सन् २००० तक फिर उसने मुड़कर पीछे नही देखा । यश, मान, सम्मान और धन की उसपर खूब कृपा हुई ।

जब कुण्डली में गजकेसरी योग, मालव्य योग, मालायोग, काहलयोग, एक त्रिकोणेश का दूसरे त्रिकोण में बैठ जाने से परम शुभ राजयोग बनता हो तो क्यों न व्यक्ति यश,मान, सम्मान और धन को भोगेगा । और तो और अष्टमेश के षष्ठ में बैठ जाने से विपरित राजयोग भी माधुरी की कुण्डली में बनता हैं । बहरहाल ग्रहों के शुभ योग व्यक्ति को उँचा उठाने का कार्य तो करते ही हैं परन्तु दशा और ग्रह योग के समय के बदल जाने से व्यक्ति उस शुभ फल से वचिंत भी हो जाता हैं । जैसे विवाह के बाद माधुरी विदेश में जा बसी और संतान इत्यादि के परम सुख में रम गई, ये केतु की दशा का फल था जो फिल्मों का फल नही कर पाता हैं । परन्तु अब फिर सात वर्षो के बाद माधुरी चर्चा में हैं और 'आ जा नच ले' फिल्म से उसकी फिल्मों में वापसी हो रही हैं । यंहा हम देखते हैं कि केतु की दशा पुर्ण हो चुकी हैं और फिल्मों का फल करने वाले ग्रह शुक्र की दशा आरंभ हो गई है। ।

उसके प्रशंसको के मन में ये प्रश्न उठते हैं कि अब क्या होगा ? क्या माधुरी फिर पहले जैसी सफलता हासिल कर पायेगी ? क्या ये फिल्म ' आजा नच ले' हिट होगी ? क्या माधुरी फिर इतिहास रच सकती हैं ? इत्यादि, इत्यादि । हालाकि इस फिल्म का बैनर अच्छा हैं, माधुरी की नृत्यागंना वाली इमेज को मद्देनजर रखकर फिल्म में नृत्य को ही मुख्य विषय बनाया गया हैं और नये कलाकारों को माधुरी के सहयोगी कलाकारों के रुप में लिया गया हैं ताकि ताजगी बनी रहे तथा माधुरी को तो मुख्य भूमिका के लिये रखा ही गया हैं। सारांश ये कि इसांनी प्रयासों से जो कुछ भी किया जा सकता हैं वो सब इस फिल्म को हिट बनाने के लिये किया गया हैं ।

अब देखें, माधुरी की कुण्डली क्या कहती हैं । माधुरी की कुण्डली वृश्चिक लग्न की हैं और लग्नेश षष्ठ में अपनी मूल त्रिकोण राशि मेष में बैठा हैं तथा लग्न पर अपनी अष्टम दृष्टि बनाये हुऐ हैं । लग्न में अकेला केतु बैठा हैं जो 'अथ् शनीवत राहु, कुजवत केतु' के अनुसार मगंल स्वरुप ही हैं । इस तरह लग्न बलवान हैं जो अपने आपमें राजयोग हैं ।

पंचम स्थान में तीन ग्रह हैं और केतु की दृष्टि इसे बलवान बनाने में सहायता करती हैं और यंही चन्द्र बैठा हैं जोकि चन्द्र लग्न बन जाता हैं तथा यहीं उच्च का शुक्र बैठकर 'मालव्य योग' का निर्माण करता हैं । इसी मालव्य योग के स्वामी शुक्र की दशा भी आरंभ हो गई हैं । इसी पंचम स्थान से भाव स्वामी गुरु केन्द्र में बैठकर इस भाव को बलवान बनाता फलस्वरुप फिल्मों में जाने का मार्ग प्रशस्त होता हैं । भावात भावम सिंध्दात के अनुसार पंचम से पंचम का स्वामी चन्द्र बनता हैं जोकि फिर लग्न से पंचम में बैठा हैं ये भी पंचम को बलवान बनाता हैं और साथ ही गुरु से केन्द्र में होने से 'गजकेसरी योग' का निर्माण भी करता हैं ।

नवांश कुण्डली में ग्रहों के फल की बात करें जो कि सही मायनों में ग्रहों के फलप्रदान का संकेत करती हैं तो लग्नेश मंगल मित्र राशि में हैं अर्थात फलदायक हैं । भाग्येश चन्द्र भी मित्रराशि में हैं और स्थितिवश शुभ हैं इस तरह चन्द्र भी फलदायक हैं । कारक गुरु स्वराशि में हैं और अपनी राशियों से शुभ स्थिति में हैं इस तरह ये भी फलदायक हैं ।

दशमेश सूर्य अपने भाव से दशम हैं परन्तु राहु से पीड़ीत हो रहा हैं इसमें कुछ अशुभता आ जाती हैं । इस तरह ये कभी माधुरी को अपयश का भागी बना सकता हैं । अकारक ग्रहों की बात करें तो बुध सर्वाधिक फलदायक ग्रह बनता हैं ये नंवाश कुण्डली में अपनी उच्च राशि में हैं और जन्म कुण्डली में लग्नेश से युति बनाये हैं । ये गुरु जैसे कारक ग्रह से अधिष्ठित राशि का स्वामी भी हैं । इसी की दशा ने माधुरी को फिल्म जगत में स्थापित किया हैं । बुध की महादशा ३० अगस्त, १९८२ से ३० अगस्त १९९९ तक चली थी । यही समय माधुरी का सर्वाधिक सफल समय देखा गया हैं । बुध ा की ही महादशा में जब कारक ग्रह चन्द्र, मंगल और गुरु की अतंर्दशाए चली तो माधुरी ने हिट फिल्में जैसे तेजाब, बेटा और दिल तो पागल हैं, जैसी सफल फिल्में दी थी ।

02 December, 2007.

ज्योतिष और फिल्म जगत

बुध, हालाकि कुण्डली का अकारक ग्रह हैं फिर भी इसने इतनी सफलता दिलाई इसलिये कि ये जिस ग्रह के साथ होता हैं उसी के प्रभाव में आ जाता हैं । देखें, ये लग्नेश मंगल के साथ हैं और इसकी राशि मिथुन में कुण्डली का कारक ग्रह गुरु बैठा हैं । जब कुण्डली राजयोगों से भरी हो तो फल तुरन्त होने लगता हैं । अब बुध भी कुण्डली के दो कारक और बलवान लग्नेश मंगल और कारक गुरु जैसे ग्रहों से प्रभावित हैं और स्वंय भी बलवान हैं तो इसने राजयोगों के फल को प्रकट करना ही था उसपर इसका अपना कला, चित्रशाला और रंगमच का नैसर्गिक फल भी हैं जो इसकी दशा में साथ साथ होता रहता हैं । कुण्डली में पंचम भाव बहुत बलवान भी हैं और वंहा शुक्र भी बैठा हैं । फलस्वरुप फिल्मों में जाना और सफलता हासिल करना बुध की महादशा में सहज ही हो गया ।

इसके बाद ३० अगस्त, १९९६ से ३० अगस्त २००६ तक केतु की महादशा चली, ये भी नवांश में चन्द्र की शुभराशि में होने से बलवान हैं हालाकि ये चन्द्र का अधिशत्रु हैं परन्तु ये शत्रुता चन्द्र से करेगा कुण्डली से नही । हमने पहले ही कहा हैं कि अकेला केतु लग्नेश मंगल का फल करेगा । भावात भावम सिंध्दात के अनुसार लग्न स्थान विवाह कारक हैं और वृश्चिक लग्न स्थित केतु की दशा में विवाह सहज ही सिध्द होता हैं । इसकी पंचम दृष्टि पंचम भाव पर पड़ती हैं, पंचम भाव कुण्डली में बलवान भी हैं इससे पुत्र लाभ भी सिध्द होता हैं । दूसरे तरिके से देखें तो पुत्रकारक मंगल और गुरु नवांश में पुरुष राशि में हैं इससे भी पुत्र संतान का संकेत मिलता हैं । केतु के नैसर्गिक फल की बात करें तो ये मोक्ष कारक ग्रह हैं इसे कला, चित्रशाला और रंगमच से क्या लेना देना सो इसने माधुरी को अपनी दशा में फिल्मों से दूर कर दिया । इस तरह केतु की महादशा में केतु ने लग्नेश मंगल का फल करते हुऐ जंहा विवाह करवा दिया वंही पुत्रलाभ भी करवा दिया ।

अब ३० अगस्त, २००६ से शुक्र की महादशा आरंभ हो गई हैं । ये आने वाले बीस वर्षो तक चलेगी । शुक्र फिल्मों का कारक ग्रह हैं सो इसकी दशा फिल्मों का प्रभाव प्रकट करेगी ही, फलस्वरुप माधुरी फिर फिल्मी दुनियॉ में आ गई हैं ।

शुक्र का विश्लेषण करेगें तो हम पायेगें कि शुक्र बहुचर्चित पंचमहापुरुष योगों में से एक 'मालव्य योग' बनाता हैं परन्तु नवांश कुण्डली में गुरु की शत्रु राशि में परन्तु तत्कालिक मैत्रीवश सम राशि में, शुक्र बलवान नही हैं । योग का फल ग्रह के बल पर निर्भर हैं और बलहीन शुक्र 'मालव्य योग' का पुर्ण फल नही कर पायेगा । फिर भी 'मालव्ययोग' बना हैं इसलिये प्रकट में ये चमक दमक को बनाये रखेगा परन्तु सन्तुष्ट नही कर पायेगा । शुक्र, चन्द्र और शनी जैसे ग्रहों के साथ हैं परन्तु अशांत्मक दूरी अधिक होने से इस युति का शुक्र को कोई लाभ नही मिलेगा । इतिहास रचने का कार्य महादशेश करते हैं और शुक्र में बुध जैसा बल नही हैं इसलिये किसी विशेष सफलता अथवा पुनः इतिहास बनने जैसा फल ये नही प्रकट कर पायेगा जैसाकि बुध की महादशा ३० अगस्त, १९८२ से ३० अगस्त १९९९ के दौरान हुआ था ।

बहरहाल कुण्डली में राजयोग भरे हुऐ हैं तो शुक्र कितना भी बलहीन हो किन्तु कुण्डली के राजयोग भी अपना फल तो प्रकट करेगें ही और इनके शुभ फल होगें शुक्र की महादशा अंतर्गत चन्द्र, मंगल और गुरु की अंतर्दशाओं में जोकि कुछ राहत को अवश्य ही प्रकट करेगें परन्तु बात तो फिर भी फिल्मों की ही हैं और फिल्मों का कारक ग्रह शुक्र हैं ।

शुक्र की महादशा के आरंभ होते ही माधुरी ने फिल्मों में आने के प्रयास तीव्र कर दिये थे जिसके फलस्वरुप 'आ जा नच ले' जैसी फिल्म बन पायी हैं । एसे भी प्रयास भाव अर्थात षष्ठ भाव माधुरी की कुण्डली में बहुत बलवान हैं जिससे माधुरी के प्रयास अक्सर सफल होते हैं परन्तु व्यवहारिक सफलता पर माधुरी का कोई जोर नही हैं । व्यवहारिक सफलता आपके प्रयासों का अतिरिक्त वो बोनस हैं जो प्रकृति आपको आपके प्रयासों के फल के अतिरिक्त देती हैं । इसका संकेत आपको आपकी कुण्डली से मिल जाता हैं । माधुरी की कुण्डली भी दर्शाती हैं कि उसके प्रयास असफल नही होगें परन्तु व्यवहारिक सफलता का अपना अंदाज हैं जोकि शुक्र की महादशा में नही हैं जबकि बुध की महादशा ३० अगस्त, १९८२ से ३० अगस्त १९९९ के दौरान प्रकट हुआ था ।

अब बात करते हैं, 'आ जा नच ले' फिल्म की । इस फिल्म की रिलिज के दौरान माधुरी की कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की ही अतंर्दशा चल रही हैं । पहले हमने माधुरी की कुण्डली के कारक ग्रहों की बात की थी और एक अकारक ग्रह बुध की भी बात की थी अब हम कुण्डली के और अकारक ग्रहों की बात करेगें । बुध के अलावा शुक्र, शनी और राहु कुण्डली के और अकारक ग्रह हैं ।

शुक्र की महादशा और अंतर्दशा का फिल्म पर इतना प्रभाव हैं कि पुरी फिल्म ही शुक्रमय हो गई हैं । नाच-गाने, संगीत, पब्लिसिटी, माधुरी के टीवी पर धड़ाघड़ इटंरव्यु, नये कलाकार, फिल्म का नाम और फिल्म का विषय सभी कुछ शुक्र के फलों से सारोबार हैं । एक अकारक बलहीन शुक्र कैसे एतिहासिक सफलता को रच सकता हैं । जैसे बारिश के बादल पुरी तरह से छा जाये और फिर बारिश ना हो कुछ एसा हाल इस फिल्म का होना हैं ।

होना ये चाहिये था कि माधुरी की कुण्डली अनुसार कारक और बलवान गुरु की विषयवस्तु को चुना जाना चाहिये था । जिसमें रचनात्मकता प्रधान रुप से हो, अनुभवी साथी कलाकार होने चाहिये थे और धड़ाधड़ भारी भरकम हैवी पब्लिसिटी के डोज के बजाय एक सधें हुए अदांज में मंथर गति से इसकी पब्लिसिटी की जानी चाहिये थी । इससे गुरु के फल प्रकट होते और नवबंर में गोचर से राशि बदलकर अपनी मूल त्रिकोण राशि धनु में जाता गुरु इसे सफल करवाने में सहयोग करता । एसे भी इस फिल्म को अब गोचर के ग्रहों का ही सहयोग हासिल हैं और जो भी थोड़ी बहुत औसत सफलता इस फिल्म को मिलेगी वो गोचर के ग्रहों से ही मिलेगी । गोचर के ग्रहों की अपनी एक सीमा हैं और ये दशाओं के फल से अपना फल मिलाकार फल को कई गुना अधिक बढ़ा देते हैं । गोचर के ग्रह अगर दशा का सहयोग नही कर पाते हैं तो फल साधारण होकर रह जाता हैं फिर चाहे गोचर के ग्रह कितने भी बलवान दिखते हों । इसी के चलते ये फिल्म माधुरी के भविष्य को कोई दिशा नही देने वाली हैं क्योंकि माधुरी की कुण्डली में दशाऐं निर्बल और गोचर बलवान हैं । इस तरह इसका सारा प्रभाव माधुरी के भविष्य पर पड़ने वाला हैं ।

Bhagyadisha Astrological Research Center - Phone : 02512550080 Mobile : 9809574444.
Disha complex 2nd floor, Kewalkunj apt. 17 sec. U.M.C. road Ulhasnagar 421003. Thane, Mumbai.

02 December, 2007.

ज्योतिष और फिल्म जगत

वर्तमान में कारक गुरु अपनी मूल त्रिकोण राशि धनु में संचार कर रहा हैं, ये कुण्डली में बलवान हैं इसलिये कुछ सहयोग कर सकता हैं । शनी सिंह राशि में संचाररत हैं और वक्रि हैं । शनी कुण्डली में निर्बल और अकारक हैं परन्तु वर्तमान में वक्रि और नवांश में शुभ होने से कुछ सहयोग कर सकता हैं । कुण्डली में शनी का मूल फल स्थायित्व लाने का हैं, निर्बल शुक्र की दशा में निर्बल शनी गोचर में बलवान होने के बावजूद कंहा से स्थायित्व ला पायेगा । ये तो बस कुछ राहत जैसा फल प्रकट करेगा और कुछ दिन इस फिल्म की चर्चा होती रहेगी ।

गुरु, माधुरी की कुण्डली का एक कारक और बलवान ग्रह हैं और चाहे गोचर में हो अथवा दशा में माधुरी की मदद अवश्य करेगा । तो इस तरह गोचर का गुरु जोकि बलवान बना हुआ हैं माधुरी को हताश और निराश नही करेगा । बहरहाल आने वाला समय अथवा दशाऐं भले ही निर्बल दिखाई देती हो परन्तु कुण्डली में योगों और बलवान ग्रहों के रुप में बहुत उर्जा हैं । ये उर्जा माधुरी को चुप और खाली नही बैठा सकती हैं परन्तु इसे एक सही दिशा में और दीर्घकालिन योजनाओं में ईस्तेमाल किया जाना बुध्दीमानी होगी । इसके लिये धैर्य और लगन की आवश्यकता होगी जोकि कुण्डली में निर्बल शनी और षष्ठ का मंगल दर्शाता हैं कि माधुरी में कम हैं । जो भी हो नायिका और नृत्यागंना के रुप में अभिनय करने के मोह से माधुरी को दूर होना होगा , कुण्डली में गुरु बलवान हैं और राशि स्वामी भी हैं इसलिये माधुरी को रचनात्मक कार्य करने के लिये पर्दे के पीछे जाना होगा, प्रोडक्शन और डायरेक्शन के क्षेत्र माधुरी के लिये उचित सिध्द होगें । व्यवहारिक दृष्टिकोण के मद्देनजर भागीदारों अथवा पार्टनर्स से भी माधुरी को दूर रहना चाहिये इसलिये कि सप्तम भाव में दो विच्छेदात्मक ग्रह सूर्य और राहु बैंठे है । ये भागीदारों अथवा पार्टनर्स से माधुरी की नही बनने देगें । इसी को देखते हुऐ आने वाले समय में माधुरी को अपने वैवाहिक जीवन के भी सजग रहना चाहिये । अपने क्रोध और जिद पर भी माधुरी को नियंत्रण रखना होगा । सन् २००६ के दौरान आरंभ होने वाली सूर्य की अंर्तदशा इस विषय में अपना फल अवश्य प्रकट करेगी । सूर्य का साधारण सा उदाहरण ये हैं कि फिल्म की रिलिज के दौरान ये माधुरी की कुण्डली अनुसार लग्न में सचांर कर रहा हैं और फिल्म के एक गीत के बोलों के कारण माधुरी को अपयश का भागी बना रहा हैं । इस गीत के कारण चारों ओर इस फिल्म का विरोध हो रहा हैं ।

गुरु के गोचर में बलवान होने के कारण इस फिल्म के बाद कुछ नये और रचनात्मक विषय ढूढने का कार्य होगा । बहरहाल गोचर में नीचाभिलाषि गुरु अधिक समय तक माधुरी के लिये आशांए बनाये रखने वाला नही हैं । हमारी शुभकामनाऐं माधुरी के साथ हैं । आशा हैं, वो कुछ नये और रचनात्मक कार्य करके अपने प्रशंसकों को प्रसन्न कर देगी ।